सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जुलाई-अगस्त, 2016

क्रूस

'यीशु ने ये बातें कह कर अपनी आंख स्वर्ग की ओर उठाते हुए कहा, 'हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची है अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र तेरी महिमा करे।' (यूहन्ना 17:1)

लोगों में क्रूस के विषय सभी तरह की धारणा होती है। जब हम क्रूस के संबंध के बारे बताते हैं, हम यीशु के महान, सिद्ध और अद्वितीय बलिदान के बारे बताते हैं, जो उसने आपके और मेरे लिये किया है जिससे हमारे सारे पाप रद्द कर दिये गये हैं। क्रूस पर यीशु के प्रायश्चित बलिदान के समतुल्य कुछ भी नहीं है। यीशु ख्रीष्ट को सबसे अधिक घृणा करने वाला कठोर व्यक्ति भी, जब क्रूस के पास आता है वह उद्धारकर्ता के प्रेम के कारण टूट जाता है।

य दि आप क्रूस के पास नहीं गये हैं और अपना सभी कूड़ा करकट नहीं उतारा हैं इसका मतलब है कि

क्रूस.... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे

कुटिया का फर्श

सन् 1904 में मैं ट्रान्सवाल के दूर दराज इलाके की यात्रा में गया था। उस दौरानघास के खुले मैदान में, एक छोटी सी कुटिया में मुझे ठहराया गया था। रात के समय विश्राम करते उस शयन कक्ष के फर्श पर मेरा ध्यान गया। ऐसा लग रहा था कि महीनों से वह फर्श साफ नहीं किया गया। मैं ने निश्चय किया कि अगले दिन उस जगह की मालकिन को इस बात का ध्यान दिलाऊँगा। और उसे अच्छी तरह से घिसकर साफ करने के लिए कहूँगा।

मगर अगले दिन सुबह , एक बात से मैं वाकिफ हुआ जो पिछली शाम मेरे ध्यान से बच गईथी। वह फर्श ऐसा बना था कि कितना भी तुम रगड़ो, वह साफ नहीं हो सकता। मिट्टी के ढेलों को, धूप में सुखाकर और कड़ा करके, आम फर्श की तरह उसे समतल और चिकना बना दिया गया।

इसलिएउस मालकिन को कह कर साफ करवाने के ख्याल को मैं ने छोड़ दिया। जितना ज्यादा ऐसे फर्श को घिसते उतना ज्यादा वह और बत्तर हो जाता। कितना भी साबुन और पानी लगाओ, तो भी कुछ साफ ना होगा। प्रिय पाठक अगर मैं यह कहूँ कि वह शयन कक्ष का फर्श, परमेश्वर की नज़रों में तुम्हारी स्थिति का उचित दृष्टांत है, क्या तुम चौंक जाओगे?

तुम इतने अशुद्ध , इतने दुष्ट हो कि अपने आप को आगे सुधार नहीं पाओगे। जिस तरह वह फर्श घिसने से भी साफ नहीं किया जा सकता था, उसी तरह तुम अपनी इस दशा को किसी भी तरह सुधार नहीं पाओगे। परमेश्वर की नज़रों में तुम उतने ही बुरे हो - यह स्वीकार करने के लिए क्या तुम तैयार हो?

कई लोग इस सत्य को सीखने में बहुत धीमे हैं। यह भ्रम में पड़कर परिश्रम करते रहते हैं कि अगर वे पूरी मेहनत लगा कर डटे रहे तो, परमेश्वर के सानिध्य में, वे अपने आप को लायक बना पायेंगे। शायद वे इस कल्पना में भी रहते होंगे कि काश एक अच्छा सा घिसने का बुरूश और खूब सारा पानी और साबुन मिल जाए तो वे उस फर्श (अपने मन) को साफ करने में कामयाब हो जायेंगे। "यद्यपि तू अपने को सज्जी से धोए और बुहत साबुन लगाए फिर भी तेरे अधर्म का धब्बा मेरे सामने बना हुआ है।" (यिर्मयाह 2:22)

अनगिनत स्त्री पु रूष इस तरह की आशा रहित कार्य में व्यस्त हैं। और कई तरह के घिसने वाले बुरुश आज़मा रहें है।

उदाहरण स्वरुप , "आत्म-संयम" का घिसने वाला बुरुश है। क्या तुमने कभी ना कभी इस बुरुश का इस्तेमाल किया है?क्या तुमनेकभी अपने क्रोध को काबू में रखने की और अपनी

बेकाबू जीभ को काबू में रखने की कोशिश की है? तुम अपने कामों पर सख्त निगरानी रखे हो। अपनी लालसाओं को काबू में करने की कोशिश करते हो? इस तरह तुम उस गन्दे फर्श को घिसने के प्रयास में हो। मगर निजी सुधार लाने में तुम बिलकुल विफल रहे हो। हमेशा की तरह, तुम परमेश्वर से उतनी ही दूरी पर हो जितना पहले थे। तुम्हारा हृदय पहले की तरह अब भी उतना ही दुष्ट है।

शायद वह "नैतिक-जीवन" का बुरुश है जिसे तुम आज़मा रहे हो। तुम गाली नहीं देते हो, धोखा नहीं देते हो या शराब भी नहीं पीते हो। तुम्हारे मुँह से कभी कुछ बुरी बात न निकलती होगी। मनुष्य जिस कार्य को दुष्ट कहे, तुम उस से दूर रहते हो। मगर यह सब, परमेश्वर के सामने तुम्हारी दशा को नहीं सुधार सकता है। तुम्हारा अपनी नैतिकता में जीना, तुम्हारे हृदय के दुष्ट स्वभाव को बदल नहीं सकता। "मैं ने अपने हृदय को साफ किया है। मैं पाप रहित, शुद्ध हूँ।" - ऐसा कौन कह सकता है?

कई लोगों की क ल्पना है कि जहाँ सब तरह के घिसने वाले बुरुश बेअसर है, वहाँ "धर्म" का बुरुश ज़रूर कामयाब रहेगा। इसलिए वे अपनी बाइबल पढ़ते और प्रार्थना करते हैं। कलीसिया में नियमित रूप से हाजिर होते हैं। प्रभु के भोज में भाग लेते हैं। शायद वे सभा में गाना भी गाते होंगे। वे सन्डे स्कूल के अध्यापक भी बन सकते है। मगर यह सब उनके भौतिक स्वभाव को बदल नहीं पाता। उनका यह धार्मिक पहनावा, अपनी अंदरूनी अशुद्धता को छिपाने में ही काम आता है।

अगर 'धर्म' का बुरुश किसी को शुद्ध कर पाये तो वह तर्शीश के शाऊल को ज़रूर शुद्ध कर पाता। अपने समकालीन लोगों में अति उत्सुक, व्यवस्था और धर्मनिष्ठाओं के पालन में सख्त, याजकों के प्रति अज्ञाकारी, पौलुस अपने दिनों का अति धर्म-निष्ठावान व्यक्ति ठहराया जा सकता था।

मगर उस दौरान भी , मसीह के विरुद्ध शाऊल के मन में घृणा भड़क रही थी। अंततः जब उनकी आँख खुली, उसने पाया की वह कितना गलत था। उन्होंने पश्चाताप किया और कहा कि वे पापियों में मुख्य पापी हैं। अपनी सब धार्मिकता के बावजूद उन्होंने स्वीकार किया, 'मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कुछ भी भला निवास नहीं सकता।' (रोमियों 7:18)

जहाँ 'आत्म संयम', या 'नैतिक-जीवन' या 'धर्म' या किसी भी प्रकार के इस तरह के घिसने वाले बुरुश तुम को साफ करने में अक्षम है, एक है जो साफ कर सकता है। प्रभु यीशु मसीह जो एक मात्र उद्धारकर्ता है। उनके अमूल्य लहू में वह सामर्थ है जो तुम्हारे पाप के गंदे धब्बों को धो सकता है।

'अवश्य है कि तू नया जन्म ले।' हर एक मसीह रहित आत्मा को इन्ही शब्दों का सामना करना पड़ेगा। एक अत्यंत धार्मिक व्यक्ति से यह शब्द कहे गये है। आज भी वो शब्द उतने ही सच हैं। प्रिय पाठक तुम्हारी भी यही जरूरत है। अवश्य है कि तुम भी नया जीवन पाओ। उस से जरा सा - कम भी, काम नहीं करेगा।

अपनी पापमय स्थिति को स्वीकार करो। अपने आप को दण्ड के योग्य ठहराओ। तब अपने उपर से नज़र पूरी तरह से हटा कर, मसीह की ओर देखो, 'जो हम से प्रेम रखता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया...' (प्रकाशितवाक्य 1:5) '... उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है।' (1 यूहन्ना 1:7)

धन्य है वह दिल जो यह कह सकताः

जैसा मैं हूँ बगैर एक बात, पर तेरे लहू से हयात

और तेरे नाम से , है नजात (उद्धार)

मसीह मसीह मैं आता हूँ। आता हूँ।

- चुना हुआ।

क्रूस... पृष्ठ1 से

आपके सभी गुप्त पाप आपने स्वीकार नहीं किए हैं। तब आप एक कूड़े करकट से भरे ट्रक में लगातार कूड़ा भरते जा रहे हैं। मैं यह देखकर उदास होता हूँ कि बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ केवल कूड़ा जमा करने वाले हैं। उनका मूँह कूड़ा करकट उगलता है। उनके विचार कूड़ा करकट उगलते हैं। जब वे खाने की मेज पर बैठते हैं वे किसी के बारे में बुरी बातें कहते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि बिना झूठी निन्दा नामक अचार के, वे खाना खा नहीं सकते हैं। जब आप इस तरह की बातें करते हैं आप

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

अपने में, अपने बच्चों में और अपने परिवार में जहर भरते हैं। ओह! यह बात मुझे बहुत दुःखित करती है। इसलिए बहुत लोग जो अच्छी तरह जानते हैं कि यह गलत है। वे अपने दिमाग में धर्म के विषय बहुत कुछ जानते हैं। वे चर्च के बेंचों को अपनी उपस्थिति से और बैठने से गर्म करते हैं। परन्तु उनके दिलों में कभी कुछ नहीं घुसता।

कोई भी व्यक्ति आप को हानि नहीं पहुँचा सकता है। केवल आपका दुष्ट हृदय और आपके बुरे विचार - जो आपके अंदर हैं। आप स्वयं अपने दुश्मन हैं। आप के नकारात्मक विचार और नकारत्मक बुद्धि आपकी सबसे बुरे दुश्मन हैं।

मेरे प्रिय पाठकों , क्रूस पर हम कैसा महान छुटकारा पाते हैं। हमारा दूषित दिमाग चला जाता है। गुलामी क्रूस के पास आने से चली जाती है। मैं प्रायः कहा करता हूँ, 'मैं किसी से नहीं डरता। मैं केवल जोशुवा दानियेल से डरता हूँ। जो बाहर से आता है वो नहीं, बल्कि वो जो मनुष्य के मन से बाहर निकलता है, वही मनुष्य को दूषित करता है। आप से क्या बाहर निकल रहा है?

यहाँ बहुत से लोग हैं जो अपने घर के लोगों के हत्यारे हैं। उनकी बातें तलवारों और बरछे से भी तेज धार वाली होती हैं। वे अपने खुद अपने बच्चों की कब्र खोदने वाले बन जाते हैं। परन्तु यीशु का क्रूस, मेरे और आपके लिये रूपान्तरण है और आप पायेंगे कि वहाँ कुछ है जिस पर गर्व किया जा सके। इसलिए संत पौलुस कहते है, 'परन्तु ऐसा कभी न हो कि मैं किसी अन्य बात पर गर्व करूँ, सिवाय प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया है, और मैं संसार की दृष्टि में।' (गलातियों 6:14) क्रूस पर यीशु मसीह ने मेरे पुराने स्वभाव को क्रूसित किया है और एक सकारात्मक स्वभाव को मुझ से प्रवाहित किया है। क्रूस पर मेरा पुराना स्वभाव मर गया है और मसीह के जी उठने का स्वभाव मेरे अन्दर आ गया है। हां, केवल क्रूस ही हमारे पुराने स्वभाव और हमारे दुष्ट हृदय से बचने के लिये शरणस्थान है। क्या यह शरणस्थान मेरे पास है जो हमने यीशु ख्रीष्ट की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरूत्थान में पाया है।

जब श्रीमान मूडी मृत्यु शैय्या पर थे, उनके चारों ओर उनका परिवार था। उन्होंने लाखों के जीवन को स्पर्श किया था। जब वे मरणासन्न थे और उनका दिल डूब रहा था, डाक्टर उन्हें फिर से जीवित करने की कोशिश कर रहा था, उन्होंने डाक्टर से कहा, 'डाक्टर, क्या ऐसा करना बुद्धिमानी है?' और जबकि मृत्यु उनके बिलकुल करीब थी, उन्होंने कहा, 'यह मेरे राज्याभिषेक का दिन है।' हां, हम सभी मृत्यु से घृणा करते हैं कि हमारे या हमारे प्रियों के पास न आये। परन्तु कौन इसे अपने 'राज्याभिषेक का दिन' कहेगा? क्रूस के द्वार, पुनरूत्थान के कारण, हमारे मृत्यु का समय भी हमारे राज्याभिषेक की घड़ी बन जाता है।

आपका सिद्धांत कुछ भी कह सकता है, आप में से कट्टर पंथी कुछ भी कह सकते हैं, मगर आप यीशु के पुनरूत्थान को झूठ नहीं कह सकते हैं। कोई भी शक्ति यीशु मसीह को कब्र में नहीं रख सकी। मैंने उस खुली कब्र में घुटने टेके। वहां कुछ भी नहीं है, परन्तु, ओह! कैसे मेरा हृदय रोमांचित है। मैंने अपने छोटे बच्चों को उस कब्र में घुटने टेकने को कहा। उस कब्र का प्रवेश द्वार सकरा था। ओह, मेरा मन प्रशंसा से कैसा भरा है। मेरे प्रिय लोगों, आपको इस सामर्थ्य को अपने अन्दर अनुभव करना चाहिए।

जब चेलों ने दुबारा जी उठे उद्धारकर्त्ता को देखा और उनके साथ खाना खाया, उनकी काया पलट गई। वे डरपोक से निडर व्यक्ति बन गये। वे सामर्थ्य से भरपूर हो गये। आप सभी इस सामर्थ्य का आनन्द ले सकते हैं। यह पवित्रात्मा की सामर्थ्य है। यह शुद्ध करने वाली सामर्थ्य है। यह हमारे सभी पाप और कूड़े करकट को जला देती है। जब भय लुप्त हो जाता है और आपका पाप स्थगित हो जाता है। आप पाप की गुलामी से स्वतंत्र हो जाते हैं। आप धार्मिकता के सेवक बन जाते हैं।

मेरे पिता गणित के शिक्षक थे , वे यह कह कर वर्णन किया करते थे, 'यीशु आप के 'हर' पाप को मिटा देता है।' जब आप एक कहते हैं, आप इसका क्या मतलब समझते हैं? एक के बाद एक बनता है। ठीक है, यदि आप नीचे के अंक को हटा दें, तब क्या होगा एक का? यह अनंत बन जाता है। अनंत! आपके जीवन से क्या सामर्थ्य निकलनी चाहिये, क्योंकि यीशु का क्रूस और यीशु की पुनरूत्थान की शक्ति, आपके जीवन के 'हर' को मिटा देती है।

मेरे प्रिय पाठकों , आप को महसूस करना चाहिए कि जब तक यह चमत्कार आपके जीवन में जगह नहीं लेता है, आप समस्याओं का हल करने वाला बनने के बदले समस्या के पैदा करने वाले बनते हैं, क्यों? आप के अन्दर शांति नहीं है, इसलिये जहां कहीं भी आप जाते हैं, आप समस्या पैदा करते हैं लेकिन केवल आप क्रूस के पास जायें और कहें, 'प्रभु यीशु, मैं चाहता हूं कि इस भयानक 'हर पाप' को आप ले लीजिये।' यीशु की पुनरूत्थान शक्ति आप को स्पर्श कर आपके जीवन को बदल देगी और आप समस्या और श्राप के बदले आशिष बनेंगे। परमेश्वर आपकी सहायता करें।

- जोशुआ दानियेल

प्रभु की सन्निधि में इंतज़ार

"और मैं, जब धरती से ऊपर उठाया जाऊँगा, सब लोगों को अपनी ओर खींचूंगा।" (युहन्ना 12:32)

बाईबल शुरु से आखिर तक क्रूस की ओर इशारा करती है। "और मैं, जब धरती से ऊपर उठाया जाऊँगा, सब लोगों को अपनी ओर खींचूंगा।" ये क्रूस पर हुआ महान काम था। क्रूस पर मनन करने से और क्रूस की समझ पाने से, क्रूस अपनी ताकत से आपको आत्मिक जीवन के ऊँचे भागों में पहुँचाएगा। जब आप प्रार्थना कर रहे होगे, आपके विचार एक के बाद एक आपको गलत नज़र आएँगे और परमेश्वर के विचार आपके दिमाग को घर कर लेंगे। परमेश्वर की तुम्हारे लिए क्या योजना है, तुम्हारे बेटे के लिए, तुम्हारे परिवार के लिए ये बातें तुम्हारे विचारों में आएँगीं।

मूसा ऐसे आत्मिक स्तर तक पहुँच गया कि परमेश्वर बड़ी आसानी से अपने विचार उसके मन में डाल सके। जो परमेश्वर की सन्निधि में इंतजार करते हैं वो अपने शरीर में बल पाएँगे, आत्मा ताज़गी पाएगी, इच्छा बदल कर नई हो जाएगी, याददाश्त तेज हो जाएगी, भावनाएं शुद्ध हो जाएँगीं और कल्पनाएँ सुधार पाएँगी। अगर परमेश्वर की सन्निधि में इंतज़ार करने का आपका मकसद अपने को बदलने का है तो तुम ऊँचे उठोगे। जब योना परमेश्वर की इच्छा के बाहर था, तो अपने और चारों तरफ के लोगों के लिए सिर्फ बोझ ही था। जब उसे ज़हाज़ से बाहर फैंका तभी वो हल्का हुआ और आँधी तथा तूफान थम गया। जो आदमी परमेश्वर की इच्छा के बाहर जीता है वो दूसरो के लिए खतरा बन जाता है – खास कर परमेश्वर का जन। ऐसा हो कि परमेश्वर अपनी सन्निधि मे इंतजार करने का अनुग्रह दे।

अतुल्य मोती

पानी से कुछ दूरी पर खड़े एक ईसाई मिश्नरी डेविड मोर्स बड़ी सावधानी से एक गोताखोर के पाए मोती को देख रहे थे : "अरे, ये तो बड़ा कीमती है!", उन्होने कहा।

पास खड़े बूढ़े आदमी ने कंधे उचकाते कहा, हाँ, ये एक "अच्छा मोती" था।

"अच्छा! क्या तुमने इससे बढ़िया मोती देखा है? ये तो अनमोल है...!"

"अरे, हाँ, इससे अच्छे मोती हैं, कहीं ज्यादा अच्छे", जवाब आया। "मेरे पास भी ऐसा एक है..."

गोताखोर ने इस नए मोती में खामियाँ देंखीं – काले धब्बे, एक ओर से दबा हुआ, एक ओर से खींचा हुआ....लेकिन जहाँ तक मोतियों की बात है, वो एक अच्छा मोती था। "ये तो वैसा ही है जैसे तुम अपने भगवान के बारे में बताते हो," गोताखोर ने जवाब दिया। "लोग अपने आप को सही मानते हैं लेकिन परमेश्वर को ही उनकी असलीयत दिखती है।" इन लोगों ने कदम बढ़ाए।

"तुम सही हो, रामबाहू। परमेश्वर उन सबको जो उन पर भरोसा करते हैं और उनके प्यारे बेटे को अपनाकर मुफ्त मोक्ष को पाना चाहते हैं, उन्हें बेदाग धार्मिकता देने के लिए तैयार हैं।"

उस गोताखोर को ये बात "ज्यादा ही आसान" लगी।: "मुझे ये मंजूर नही है। शायद मैं कुछ ज्यादा ही स्वाभिमानी हूँ। स्वर्ग में अपनी जगह को पाने के लिए मुझे कुछ न कुछ तो अपने दम पर करना पड़ेगा।"

मोर्स ने असहमति जताई: "स्वर्ग का केवल एक ही रास्ता है," उसने उस बुज़ुर्ग गोताखोर से कहा। "अगर तुम स्वर्ग के फाटकों पर लगे मोतियों को देखने की आस रखते हो, तो तुम्हें ये नया जीवन परमेश्वर के बेटे पर विश्वास करके ही पाना होगा" उसे आने वाले जीवन की तैयार करने की ज़रूरत है।

"मैं ठीक यही करने वाला हूं," रामबाहू ने जवाब दिया। जीवनभर उसकी अभिलाषा थी कि वो एक तीर्थयात्रा करे।: "निश्चय इस बार मैं स्वर्ग का भागी बनूंगा। मैं अपने घुटनों पर दिल्ली जाने की तैयारी कर रहा हूँ।" क्या सनातन उसकी इस मीठी दर्द भरी तपस्या से खुश न होगा, ये 900 मील की यात्रा, और इस तरह से क्या स्वर्ग में जगह न खरीदी जाएगी?

"मेरे दोस्त!" मिश्नरी बोला, "असंभव! मैं तुझे ये कैसे करने दूं, जब यीशु मसीह ने तेरे लिए स्वर्ग में जगह बनाने के लिए कुर्बानी दी है।" लेकिन बूढ़े आदमी को ये बात समझ नहीं आई और बहुत बार उसे स्वर्ग में जाने के भगवान के रास्ते को बताया गया था, लेकिन उसे मसीह में मुफ्त मोक्ष गवारा नहीं था।

एक दोपहर, रामबाहू ने चाहा कि मिश्नरी उसके घर पधारे।

मिश्नरी का दिल बाग-बाग हो उठा। शायद आज आखिर में भगवान उसकी प्रार्थना का जवाब देने वाले हैं। लेकिन जब उस बुज़ुर्ग गोताखोर ने दिल्ली जाने की तैयारी के बारे में बताया तो ये बात सुन कर मिश्नरी का दिल बैठ गया।

घर पहुँचने पर, रामबाहू एक संदूक मोर्स के पास लाया: "मैंने इसमें केवल एक ही चीज़ रखी है," वो बोला। "अब मैं आपको इसके बारे में बताता हूँ। मोर्स साहिब, मेरा एक बेटा था।"

"एक बेटा! अरे, रामबाहू, तुमने आज तक उसके बारे में एक शब्द तक नहीं

सत्य की परख!

"मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा ? हमारे प्रभु यीशु के द्वारा" (रोमियो 7:24-25अ)

बोला!''

''नहीं साहिब, मेरे बस में नहीं था।'' गोताखोर की आँखे नम हो गईं। दिल्ली जाने से पहले वो मिश्नरी को अपने बेटे की कहानी बताना चाहता था, भारत के तटीय इलाके का, ''सबसे बेहतरीन गोताखोर'': ''उसने मुझे कितना आनंद दिया! उसका एक सपना था कि वो ऐसा कीमती मोती पाए जो आजतक किसी ने नहीं ढूंढा हो। एक दिन उसे ऐसा मोती मिला। लेकिन जब तक वो मोती उसे मिला तब तक वो पानी के नीचे काफी समय बिता चुका था। इसके थोड़ी देर बाद उसकी मौत हो गई।'' बूढ़े गोताखोर ने सिर झुकाया और उसका सारा शरीर काँपने लगा। जाने से पहले, ''तुझे, मेरे प्यारे घनिष्ठ मित्र'' वो मोर्स से बोला, ''मैं ये मोती दे रहा हूँ।'' संदूक से एक बड़ा पैकिट निकाला और एक बहुत बड़ा मोती अपने मिश्नरी दोस्त के हाथ पर रख दिया। उसकी आभा दूसरे मोतियों से अलग ही थी।

निस्तब्ध, मोर्स उसे अवाक हो निहार रहे थे। ''मुझे इसे खरीदने दो,'' उन्होंने अखिर में कहा।

''साहिब,'' रामबाहू का शरीर अकड़ा, ''ये मोती अनमोल है, इसकी कोई कीमत नहीं। इस दुनिया में किसी के पास इतना पैसा नहीं हैं कि इस मोती के लिए कीमत चुका सके। ये मेरे लिए इतना कीमती है।'' वो उसे बेचने के लिए तैयार नहीं था। मोर्स उसे केवल तोहफे के तौर पर पा सकता था।

''नहीं...मैं ये मोती ज़रूर लेना चाहता हूँ,'' मोर्स ने जवाब दिया, ''लेकिन इस तरह से इसे नहीं ले सकता। शायद मैं स्वाभिमानी हूँ, लेकिन ये तो बड़ा आसान तरीका है। मैं इसे पाने के लिए या तो कीमत चुकाऊँगा या भरपाई के लिए कुछ काम करूँगा।''

बूढ़ा मोतियों का गोताखोर अवाक रह गया। मिश्नरी को शायद समझ नहीं आ रहा था: ''क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता? मेरे इकलौते बेटे ने इस मोती के लिए अपनी जान कुर्बान की है, मैं इसे किसी भी कीमत पर नहीं बेच सकता। इसकी कीमत मेरे बेटे के खून से चुकाई गई है....मैं तुमसे प्यार करता हूँ, इसलिए इसे प्यार के तोहफे के तौर पर रख लो।'' मिश्नरी का गला भर आया। ''रामबाहू,'' आखिर में उसने कहा, ''क्या तुम्हें नहीं दिखता? तुम खुद यही बात परमेश्वर को कहते रहे हो।'' गोताखोर देख कर सोच में पड़ गया और धीरे-धीरे उसे समझ में आने लगा। ''परमेश्वर तुम्हें तोहफे के तौर पर अनन्त जीवन यानि मोक्ष देना चाहते हैं।'' वो इतना महान और इतना कीमती है कि उसका दाम नहीं चुकाया जा सकता, न खरीदा जा सकता या न उसके लायक बना जा सकता। ''तुम्हारे लिए स्वर्ग का मार्ग तैयार करने के लिए परमेश्वर को अपने इकलौते बेटे के खून के द्वारा इसकी कीमत चुकानी पड़ी। रामबाहू, हाँ मैं दीन होकर इस मोती को लेने के लिए तैयार हूँ, ये प्रार्थना करने हुए कि मैं तुम्हारे इस प्यार के काबिल ठहरूँ। रामबाहू, क्या तुम परमेश्वर के मोक्ष के महान तोहफे को कबूल नहीं करोगे, दीन होकर, ये जानते हुए कि तुम्हें देने के लिए उसे अपने बेटे की कुर्बानी करनी पड़ी?'' बूढ़ा आदमी रोने लगा, उसकी समझ से पर्दा हट गया था: ''साहिब, मुझे अब समझ में आया। मैं मानता हूँ कि मेरे लिए यीशु ने अपनी जान गँवाई। मैं उन्हें अपनाता हूँ।''

''परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।'' (रोमियों 6:23)

''परमेश्वर को, उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद!'' (2 कुरिन्थियों 9:15)

''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)

अनदेखा सबूत

दूसरे विश्व युद्ध के खून खराबे के दौरान, जापानियों ने सफलता से डच ईस्ट ईंडीज़ (इंडोनेशिया) पर कब्जा कर लिया था, जिसकी वजह से बहुत से लोग युद्ध में कैदी बने और क्रूर यातना का सामना किया। इन कैदियों में सी. रस्सल डिबलर, कापाऊकू कबीले में मिश्नरी के तौर पर सेवा कर रहे थे, और साथ में उनकी जवान पत्नी डारलीन थीं। रस्सल की मृत्यु 1944 में होने वाली थी, लेकिन उनकी पत्नी ये कहानी बताने के लिए ''अनदेखा सबूत'' ज़िंदा रहीं – अद्भुत विश्वास की कहानी जो जापानी युद्ध – कैदियों के शिविर में घटी।

डारलीन के कैंपीली(1943) कैदी शिविर में पहुँचने पर, एक वरिष्ठ मिश्नरी ने सलाह दी: ''बेटी, जो कुछ भी तू करे, यीशु मसीह की सच्ची सिपाही बने रहना।'' इन शब्दों ने उसे इन अंधकारमय दिनो में संभाला।

अंधकारमय दिनों में, परमेश्वर ने डारलीन के दिल को तसल्ली दी। पहली रात को जब उसे खंदक में भेजा गया, चारों तरफ बमो के धमाके हो रहे थे। (भजन 91:7) का ये भाग लगातार उसके मन में आता रहा, ''वो तुम्हारे नज़दीक नहीं आएगा।'' जब उसने अपने पति की मौत के बारे में सुना, परमेश्वर ने उसके दिल के मंदिर में खड़े होकर ये शब्द कहे: ''उसने मुझे इसलिए भेजा है

कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं...सब शोकितों को शान्ति दूं...राख के बदले माला, शोक के बदले हर्ष का तेल, और निराशा के बदले बड़ाई का औढ़ना प्रदान करूँ..." (यशायाह 61:1-3) दुख की तलवार ने गहरा घाव किया लेकिन उस तलवार को तेल और आशिष से पवित्र आत्मा ने सांत्वना से भर दिया।

एक दिन, केंपिटाई – जापानी सेना की खूंखार पुलिस – डारलीन को शिविर से लेकर अलग बंदीघर में लेजाने के लिए आई। डारलीन परमेश्वर के प्यार की सच्चाई को जानती थी, इसलिए उसने इस बात के लिए पूरे मन से समर्पण कर दिया: "ठीक है," वो फुसफुसाई, "आप मुझे बिलकुल मत छोड़ना।" परमेश्वर विश्वासयोग्य था।

एक दोपहर ढलने के समय, डारलीन ने अपने कैदखाने में ताक पर एक छुरी को पड़े पाया। ये कहाँ से आई? किसने उसे वहाँ रखा? कब? क्यों? वो इसका क्या करे? क्या ये उकसा कर आत्महत्या करने के लिए रखी गई थी, या उसके विरोध में कोई सबूत बनाने के लिए? डारलीन का पेट ऐंठने लगा। उसने घुटने टेके और अपने मूँह को घुटनो के बीच छिपाकर उसने प्रार्थना में प्रभु को सारी हालत बता दी। उसकी आत्मा में शांति छा गई और वो अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर की स्तुति करने लगी, एलियाह के परमेश्वर, दानियल के, चमत्कार करने वाले परमेश्वर की। "हे भगवान, अगर तू अपने लोगों को मिस्र देश की क्रूरता से बचाने के लिए लाल सागर को दो-भागों में बांट सकता है, अगर तू अपने स्वर्गदूतों को भेज कर शेरों के मूँह को बंद कर सकता है ताकि वो दानियल को न मारें – तो, तेरे लिए इस छुरी को यहाँ से हटाना ज़रा सी बात है। हे पिता, तेरा धन्यवाद।"

तीन दिन तक, डारलीन इस छह फुटे कमरे से बाहर नहीं निकली। लेकिन तीसरे दिन की दुपहर के समय, उसने सरक कर देखा तो ताक खाली पड़ा था। छुरी वहाँ से चली गई!" – और अब पिता उस व्यक्ति के मन से जिसने ये छुरी रखी थी, इस याददाश्त को मिटा दे।" उसने ठीक वैसा ही किया। परमेश्वर के लिए अब भी सबकुछ संभव है।

जब डारलीन को जुलाब हुआ तो महान वैद्य (यीशु मसीह) वहाँ से गुज़रा, विश्वास से डारलीन ने उसके कपड़ों के छोर को छूआ, और वो जुलाब, कमज़ोरी और मलेरिया के रोग से चंगी हुई। उसने दवाई लाने वाले सिपाही को गवाही दी कि कैसे जीवते परमेश्वर ने उसके रोगों को चंगा कर दिया।

परमेश्वर ने उसकी ज़रूरतों को भी पूरा किया। एक दफा डारलीन अपने कैदखाने के दरवाजे के उपर लगी सलाखों पर लटके हुए बाहर देख रही थी, उसने देखा कि एक औरत शिविर की बाड़ जो लताओं से ढकी थी उसके बीच से किसी से केले के फल ले रही थी। थककर वो फर्श पर ढह गई और प्रभु से खाने के लिए एक केला माँगा। फिर वो सोचने लगी - अरे परमेश्वर उसे कैसे पूरा कर सकते हैं? उसे कोई रास्ता नहीं सूझा कि इस कैदखाने की दिवार के बीच से कैसे केला उसके पास आ सकता है, ये ख्याल छुरी से मुक्ति और बिमारी से चंगाई पाने के बाद भी उसके मन में उठा। "प्रभु तेरे लिए ये उपाय करने का साधन नहीं है।," उसने प्रार्थना की।

अगले दिन, अचानक ही कैंपीली शिविर मे उससे मिलने के लिए श्रीमान यामाजी, जो शिविर का सबसे क्रूर कमांडर था, का आना हुआ। उसने कमांडर को प्रभु यीशु और उनके प्यार की गवाही दी थी और उसके लिए प्रार्थना की थी। आखिर में उसकी कालकोठरी से जाने के बाद, वहाँ का पहरेदार सिपाही आया, उसने दरवाज़ा खोला, अंदर आया और हाथ झुलाकर उसके सामने केलों का गुच्छा रख दिया! "ये तुम्हारे लिए हैं," वो बोला, "ये सब यामाजी ने भेजे हैं।" डारलीन भौंचक्की होकर ज़मीन पर बैठ गई और गिनने लगी। वहाँ बानवे-92 केलों का ढेर लगा था!

डारलीन को प्रभु के सामने कभी ऐसी शर्म नहीं आई थी। उसने धकेलकर केलों को कोने में रखा और प्रभु के सामने रोने लगी, "प्रभु यीशु, मुझे माफ करो, मुझे बड़ी शर्म आ रही है। मैंने तो आप पर एक केला दे पाओगे ये भी भरोसा नहीं किया था। ज़रा उन्हें देखो – वो तो गिनती में लगभग एक सौ हैं।"

मन के शांत होने पर, परमेश्वर ने उसके दिल में कहा: "मुझे ऐसा करने में बहुत खुशी होती है, तुम्हारे माँगने और सोचने से कहीं ज्यादा करना।" उस पल डारलीन को मालूम था कि परमेश्वर के लिए कुछ भी कर पाना असंभव नहीं है – और जिस दिन उसने आखिरी केला छीलकर खाया, जो सूख कर काले पड़ गए थे, उसे वापस कैंपीली लेजाया गया। यहाँ केलों ने उसकी जान को बचाए रखा।

उस साल डारलीन के छूट जाने के बाद वो अमरीका लौटी और दुबारा न्यु गिनिया में सुसमाचार बाँटने के लिए आई। उन काले दिनों में, डारलीन को उस विश्वास के अनुभव से गुज़रना पड़ा – "आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण.." (इब्रानियों 11:1), कभी न बदलने वाले यीशु मसीह में उसका भरोसा।

- *डारलीन डाईबलर रोज़,*
  अनदेखा सबूत।